जैन जी. के.

General Knowledge

भाग -10

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

• प्रथम संस्करण : 1000
15 अगस्त 2010
• द्वितीय संस्करण : 1000
5 सितम्बर 2015

प्रकाशकीय

आज की नई पीढ़ी में प्रवचन आदि धार्मिक क्रियाकलापों के प्रति अरुचि होती जा रही है, जिसका मूलकारण पारिभाषिक जैन शब्दावली से अपरिचय ही है। नई पीढ़ी में रुचि जागृत करने हेतु विदुषी लेखिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया द्वारा लिखित जैन जी. के. नामक यह पुस्तक श्रृंखला जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों और तथ्यों की सामान्य जानकारी कराने वाली हैं।

जिस प्रकार स्कूल में हम इतने विषय पढ़ते हैं, उनमें से हमें कुछ याद नहीं रहता, मात्र संस्कार रह जाते हैं, जिससे दुनिया में हमें अजनबीपन का अहसास नहीं होता; बड़े होकर हम कुछ भी, कैसे भी करने की हिम्मत रखते हैं; उसी प्रकार इन पुस्तकों को पढ़ने से हमारे मन में जैनदर्शन की विषयवस्तु के संस्कार रह जाएंगे, जो कि जिनागम के मूल सिद्धान्तों को समझते समय, प्रवचन सुनते समय हमें अपरिचय का अहसास नहीं कराएँगे। इन्हें पढ़कर हम जिनागम के अगाध समुद्र में तैरने की सामर्थ्य रख सकते हैं। बचपन में बीज रूप में पड़े हुए अच्छे-बुरे संस्कार ही भावी जीवन के निर्माता होते हैं। बालकों में अच्छे संस्कारों का विकास हो- ऐसी हमारी भावना है।

जैन जी. के पुस्तकों की श्रृंखला को आकर्षक कलेवर में प्रस्तुत करने का श्रमसाध्य कार्य आराध्य टड़ैया, मुंबई ने किया है तथा प्रकाशन व्यवस्था का सम्पूर्ण दायित्व अखिल बंसल ने बखूबी निभाया है, अतः हम उनके आभारी हैं।

प्रकाशन मंत्री
ब्र. यशपाल जैन

लेखिका :
©विदुत्तरत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया
बी. ए. ऑनर्स (स्वर्णपदक प्राप्त)
एम. ए., पी. एच. डी. (मुम्बई)
M. 09321295265
Email - dpptmumbai@gmail.com

प्रकाशक :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
ए - 4, बापूनगर, जयपुर (राज)
मुद्रण व्यवस्था
अखिल बंसल मो. 09929655786
डिजाईनिंग एवं कम्प्यूटर ग्राफिक्स निर्देशन
आराध्य टड़ैया, मुंबई

मूल्य 15 /-

क्या / कहाँ

1. प्रार्थना	9. बताओ तो जानें ?
2. अनेकान्त	10. सही उत्तर चुनिए
3. स्याद्वाद	11. समुद्घात और उसके भेद
4. गुणस्थान	12. तैजस समुद्घात
5. प्रमाण	13. आहारक और केवली समुद्घात
6. प्रमाणाभास और संशय	14. जिनागम से
7. विपर्यय और अनध्यवसाय	15. कर्त्ता कौन ?
8. क्या आप जानते हो ?	16. आत्मानुभूति कैसे करते हैं ?

१

प्रार्थना

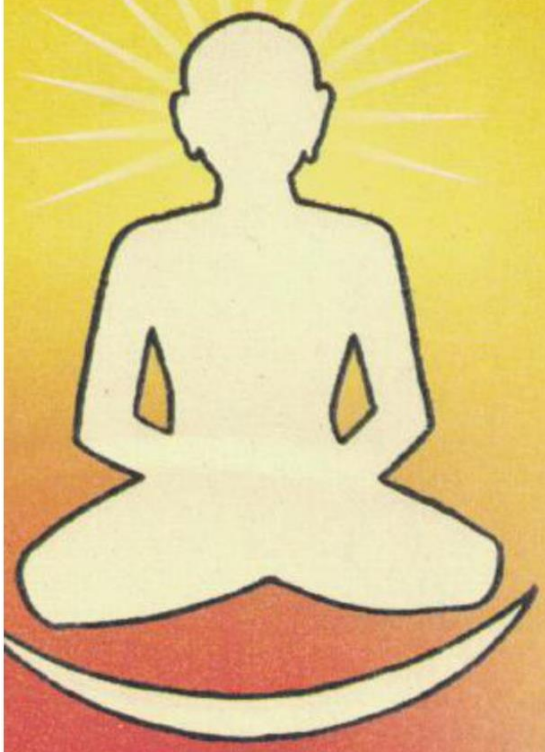

हे भगवन्!

कहने में आता है नासाग्र दृष्टि है आपकी,
पर वस्तुतः तो आत्मदृष्टि है आपकी।
शुद्धात्म दृष्टि ही आत्मदृष्टि होती है,
यही 'दृष्टि का विषय' कहलाती है।

पर्याय नहीं होती 'दृष्टि का विषय',
द्रव्य ही है होता 'दृष्टि का विषय'
भेद नहीं होता 'दृष्टि का विषय',
अभेद ही है होता, 'दृष्टि का विषय',
भेद करने से आत्मा खण्डित है होता,
खण्डित आत्मा दृष्टि का विषय नहीं होता।
अखण्ड आत्मा ही दृष्टि का विषय बनता,
अखण्ड के आश्रय से ही सच्चा सुख मिलता।

२

अनेकान्त

१. अनेकान्त से क्या तात्पर्य है?

परस्पर विरूद्ध प्रतीत होनेवाले दो धर्मों का एक ही वस्तु में होना अनेकान्त है।

२. धर्म से क्या तात्पर्य है?

जो शक्तियाँ सापेक्ष होती हैं पर परस्पर विरूद्ध प्रतीत होती हैं, उन्हें धर्म कहते हैं।

३. प्रत्येक वस्तु में कितने धर्म होते हैं ?

प्रत्येक वस्तु में अनन्त धर्म होते हैं।

४. क्या वस्तु के अनन्त धर्मों को एकसाथ कहा जा सकता है ?

नहीं, वस्तु के अनन्त धर्मों को एकसाथ नहीं कहा जा सकता है।

५. क्या वस्तु के अनन्त धर्मों को एकसाथ जाना जा सकता है ?

हाँ, वस्तु के अनन्त धर्मों को एकसाथ जाना सकता है।

६. अनन्त धर्मात्मक वस्तु को कैसे जाना जा सकता है ?

प्रमाण द्वारा

३

स्याद्वाद

१. स्याद्वाद किसे कहते हैं ?
वस्तु के अनेकांत स्वरूप को समझाने वाली सापेक्ष कथनपद्धति को स्याद्वाद कहते हैं।

२. स्याद्वाद में स्यात् पद किस अर्थ का वाचक होता है ?
निश्चित अपेक्षा का।

३. क्या स्यात् पद अविवक्षित धर्मों का अभाव करता है ?
नहीं स्यात् पद अविवक्षित धर्मों का अभाव नहीं करता है।

४. स्यात पद अविवक्षित धर्मों का निषेध नहीं करता है, तो क्या करता है?
स्यात् - पद अविवक्षित धर्मों को गौण करता है।

५. स्याद्वाद शैली में 'भी' शब्द किस की सत्ता का सूचक है ?
अनुक्त की सत्ता का।

६. स्याद्वाद शैली में 'ही' शब्द किसकी सत्ता का सूचक है ?
दृढ़ता का।

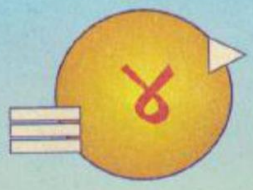

४ गुणस्थान

१. जीव की मिथ्यात्व अवस्था से परमात्म अवस्था तक के क्रमिक विकास को किसके द्वारा समझाया गया है ?

गुणस्थानों द्वारा समझाया गया है।

२. गुणस्थान किसे कहते हैं ?

मोह और योग के निमित्त से जीव के श्रद्धा व चारित्र गुण की होने वाली तारतम्यरूप अवस्था विशेष को गुणस्थान कहते हैं।

३. गुणस्थान कितने होते हैं ? नाम बताइए ।

गुणस्थान चौदह होते हैं - १) मिथ्यात्व २) सासादन ३) मिश्र ४) अविरतसम्यक्त्व ५) देशविरत ६) प्रमत्तसंयत ७) अप्रमतसंयत ८) अपूर्वकरण ९) अनिवृत्तिकरण १०) सूक्ष्मसांपराय ११) उपशांतमोह १२)क्षीणमोह १३)सयोगकेवली १४) अयोगकेवली

४. जब तक सम्यग्दर्शन नहीं होता तब तक जीव कौन से गुणस्थान में होता है ?

प्रथम मिथ्यात्व गुणस्थान में ।

५. सम्यग्दर्शन कौन सी गति में किस जीव को हो सकता है?

सम्यग्दर्शन चारों गतियों में सैनी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीव को हो सकता है ।

६. असंज्ञी जीवों के कितने गुणस्थान होते हैं ?

केवल पहला गुणस्थान।

७. सिद्ध जीवों के कौन सा गुणस्थान होता है ?

कोई सा नहीं, वे गुणस्थान रहित होते हैं ।

५ प्रमाण

स्व - स्वरूप निर्णय होता जिससे,
पर-पदार्थों का निर्णय होता जिससे।
सर्वग्राही निश्चयात्मक होता जो,
संशय-विपर्ययादि रहित होता वो।
सम्यक्ज्ञान भी कहते जिसको,
बतलाओ क्या कहते उसको?

प्रमाण

१. प्रमाण किसे कहते हैं ?
अपने और पर पदार्थों के स्वरूप का संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय रहित निर्णय करने वाले सम्यक् ज्ञान को प्रमाण कहते हैं।

२. श्रुतज्ञान नय हैं या प्रमाण ?
प्रमाण ।

३. नय वाक्यों में स्यात् शब्द लगाकर बोलने को क्या कहते हैं ?
प्रमाण ।

४. प्रमाण का विषय क्या है ?
अनेकान्तात्मक वस्तुयें है ।

५. पदार्थ के समग्र स्वभाव को एक साथ किसके द्वारा जाना जाता है ?
प्रमाण।

६. प्रमाण अंशग्राही होता है या सर्वग्राही।
सर्वग्राही ।

७. क्या प्रमाण पद्धति में वस्तु में मुख्यता-गौणता होती है ?
नहीं।

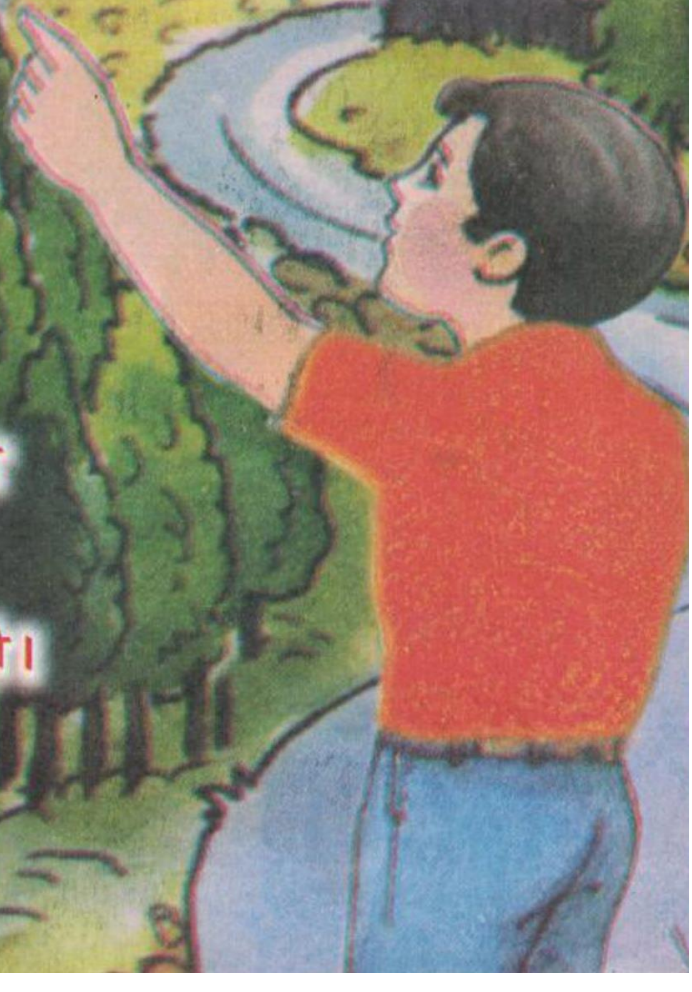

६ प्रमाणाभास और संशय

जिससे पदार्थों का निर्णय नहीं होता,
जो संशय-विपर्यायादि सहित है होता।
जो निर्मल और स्पष्ट नहीं होता,
जो वस्तु में यथार्थता उत्पन्न नहीं करता ।
मिथ्याज्ञान भी कहते जिसको,
बतलाओ क्या कहते उसको?

प्रमाणाभास

यह चांदी है या सीप ?
रस्सी है या सांप ?
यह संदेह बना रहता जब,
कोई निर्णय नहीं होता तब,
ऐसा अनिश्चित ज्ञान हूँ मैं,
बतलाओ कौन हूँ मैं ?

संशय

१. प्रमाणाभास किसे कहते हैं?
जिससे पदार्थों का निर्णय नहीं होता ऐसे संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय सहित मिथ्याज्ञान को प्रमाणाभास कहते हैं ।

२. संशय किसे कहते हैं ?
परस्पर विरुद्ध अनेक पक्षों का अवगाहन करनेवाले अनिश्चितज्ञान को संशय कहते हैं। जैसे - यह रस्सी है या सांप।

7 विपर्यय और अनध्यवसाय

विपरीत निर्णय होता है जहाँ,
उल्टा ज्ञान ही होता है वहाँ।
रस्सी को सांप समझा जहाँ,
बताइए कौन सा ज्ञान वहाँ?
विपर्यय

संशय भी नहीं जहाँ,
निर्णय भी नहीं वहाँ।
'कुछ है' ऐसा ज्ञान जहाँ,
बताओ कौन सा ज्ञान वहाँ ?
अनध्यवसाय

१. विपर्यय किसे कहते हैं ?
विपरीत एक पक्ष का निर्णय करनेवाले ज्ञान को विपर्यय कहते हैं। जैसे - रस्सी को सांप समझना।

२. अनध्यवसाय किसे कहते हैं ?
अनिश्चित, सामान्य, विकल्प (इच्छा) रहित ज्ञान को अनध्यवसाय कहते हैं। जैसे - चलते समय पैर में स्पर्श हुए पत्थर में 'कुछ है' ऐसा ज्ञान।

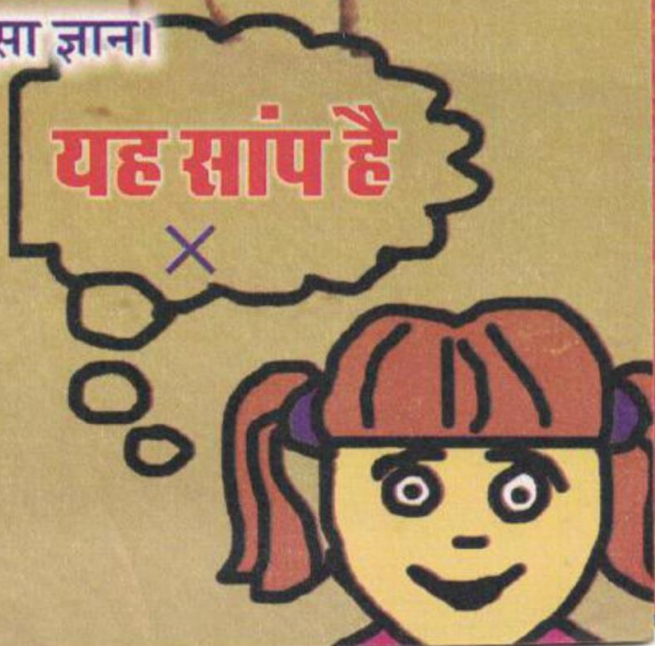

8 क्या आप जानते हो?

१. क्या केवली आत्मा को मुख्य रूप से जानते हैं और पर को गौण रूप से?
केवलज्ञान में मुख्य-गौण की व्यवस्था नहीं है, क्योंकि केवलज्ञान प्रमाणज्ञान है और प्रमाणज्ञान में सभी पक्ष मुख्य ही रहते हैं।

२. क्या केवली निश्चय से आत्मा को जानते हैं और व्यवहार से पर को?
नहीं, केवली के नय नहीं होते, वे प्रतिसमय स्व और पर - दोनों को एक साथ जानते हैं, जान रहे हैं।

३. केवली भगवान का स्व को जानना क्या कहलाता है?
निश्चय

४. केवली भगवान का पर को जानना क्या कहलाता है?
व्यवहार

५. केवली का स्व को जानना निश्चय क्यों कहलाता है?
वे आत्मा को 'यह मैं हूँ' ऐसा जानते हैं, इसलिए स्व को जानना निश्चय कहलाता है।

६. केवली के पर को जानने को व्यवहार क्यों कहते हैं?
पर पदार्थ 'मुझ से भिन्न हैं - ये मैं नहीं हूँ' - ऐसा जानने के कारण केवली के पर को जानने को व्यवहार कहते हैं।

9

बताओ तो जानें?

१. किन गुणस्थान वालों का नियम से उपदेश नहीं होता है?
सातवें से बारहवें गुणस्थान वालों का नियम से उपदेश नहीं होता है।

२. किस गुणस्थान में इच्छा रहित उपदेश होता है?
मात्र तेरहवें गुणस्थानवर्ती अरहंतों के ही इच्छा रहित उपदेश होता है।

३. धर्मध्यान किस गुणस्थान से किस गुणस्थान तक होता है?
चौथे से सातवें तक।

४. शुक्लध्यान किस गुणस्थान से किस गुणस्थान तक होता है?
आंठवे से चौदहवें तक।

५. आर्तध्यान किस गुणस्थान तक होता है?
छंठवे तक।

६. रौद्रध्यान किस गुणस्थान तक होता है?
पाँचवे तक।

10

सही उत्तर चुनिए

१. पहले से चौथे गुणस्थान में मरकर जीव ..... गतियों में जा सकता है।
(क) नरक (ख) तिर्यंच (ग) चारों

२. दूसरे गुणस्थान से मरकर जीव ..... गति में नहीं जाता।
(क) नरक (ख) तिर्यंच (ग) चारों

३. ..... गुणस्थान में जीव का मरण नहीं होता।
(क) पहले (ख) दूसरे (ग) तीसरे

४. पाँचवे से ग्यारहवें गुणस्थानों में से मरकर जीव ..... गति में ही जाता है।
(क) नरक (ख) तिर्यंच (ग) देव

५. ग्यारहवें गुणस्थान से जीव नियम से ..... के गुणस्थान में ही जाता है।
(क) ऊपर (ख) नीचे

६. बारहवें गुणस्थान से जीव नियम से ..... गुणस्थान में ही जाता है।
(क) ग्यारहवें (ख) तेरहवें (ग) चौदहवें

७. तेरहवें गुणस्थान से जीव नियम से ..... गुणस्थान में ही जाता है।
(क) ग्यारहवें (ख) तेरहवें (ग) चौदहवें

८. चौदहवें गुणस्थान से जीव नियम से ..... बनते हैं।
(क) बारहवें (ख) तेरहवें (ग) सिद्ध

सही उत्तर
1. (ग), 2. (क), 3. (ग), 4. (ग), 5. (ख), 6. (ख), 7. (ग), 8. (ग)

११ समुद्घात और उसके भेद

१. समुद्घात किसे कहते हैं ?

मूल शरीर को छोडे बिना आत्म प्रदेशों का शरीर से बाहर निकलकर फिर शरीर में समाने को समुद्घात कहते हैं।

२. समुद्घात कितने प्रकार के होते हैं ? नाम बताइए ।

समुद्घात सात प्रकार के होते हैं - (१) वेदना (२) कषाय (३) वैक्रियक (४) मारणान्तिक (५) तैजस (६) आहारक और (७) केवली समुद्घात

३. वेदना समुद्घात किसे कहते हैं ?

तीव्र पीड़ा के अनुभव से आत्मप्रदेशों का शरीर से बाहर निकलने को वेदना समुद्घात कहते हैं ।

४. कषाय समुद्घात किसे कहते हैं ?

कषाय की तीव्रता से जीव प्रदेशों का अपने शरीर से तिगुने प्रमाण फैलने को कषाय समुद्घात कहते हैं ।

५. वैक्रियक समुद्घात किसे कहते हैं ?

विक्रिया शरीर वाले देव और नारकी जीवों का अपने शरीर को छोटा-बड़ा या अन्य शरीर रूप करने के लिए आत्मा के प्रदेशों का बाहर जाने को वैक्रियक समुद्घात कहते हैं ।

६. मरणांतिक समुद्घात किसे कहते हैं ?

मरण के अंतर्मुहूर्त पूर्व नवीन पर्याय धारण करने के क्षेत्र पर्यंत आत्म प्रदेशों का बाहर निकल कर नवीन भव के क्षेत्र (स्थान) को स्पर्श करने को मरणांतिक समुद्घात कहते हैं ।

७. जिनके आयुबंध न हुआ हो क्या उन्हें मरणांतिक समुद्घात हो सकता है ?

नहीं

१२

तैजस समुद्घात

१. तैजस समुद्घात किसे कहते हैं ?
जीवों के अनुग्रह और विनाश के लिए मुनिराज के कंधों से आत्मप्रदेशों के बाहर निकलने को तैजस समुद्घात कहते हैं।

२. तैजस समुद्घात कितने प्रकार का होता है ? नाम बताइए।
तैजस समुद्घात दो प्रकार का होता है - शुभ तैजस और अशुभ तैजस।

३. शुभ तैजस समुद्घात किसे कहते हैं ?
जगत को दुर्भिक्ष आदि कारणों से दुःखी देखकर जिनको दया उत्पन्न हुई है, ऐसे संयमी मुनिराज के मूल शरीर को न छोडकर धवल रंग का पुरुषाकार पुतला दायें कंधे से निकलकर दुर्भिक्ष आदि दुःखदायी कारणों को दूरकर वापिस मुनिराज के शरीर में ही आकर समा जाता है। इसे ही शुभ तैजस समुद्घात कहते हैं।

४. अशुभ तैजस समुद्घात किसे कहते हैं ?
अनिष्ट करने वाले कारण को देखकर जिनको क्रोध उत्पन्न हुआ है, ऐसे संयमी मुनिराज के मूल शरीर को न छोडकर लाल रंग का बिलावाकार पुतला बायें कंधे से निकलकर अनिष्टकारक पदार्थ को भस्मकर वापिस मुनिराज के शरीर में ही समाकर (अधिक देर ठहर जाय तो) मुनिराज को भी भस्म कर देता है। इसे ही अशुभ तैजस समुद्घात कहते हैं।

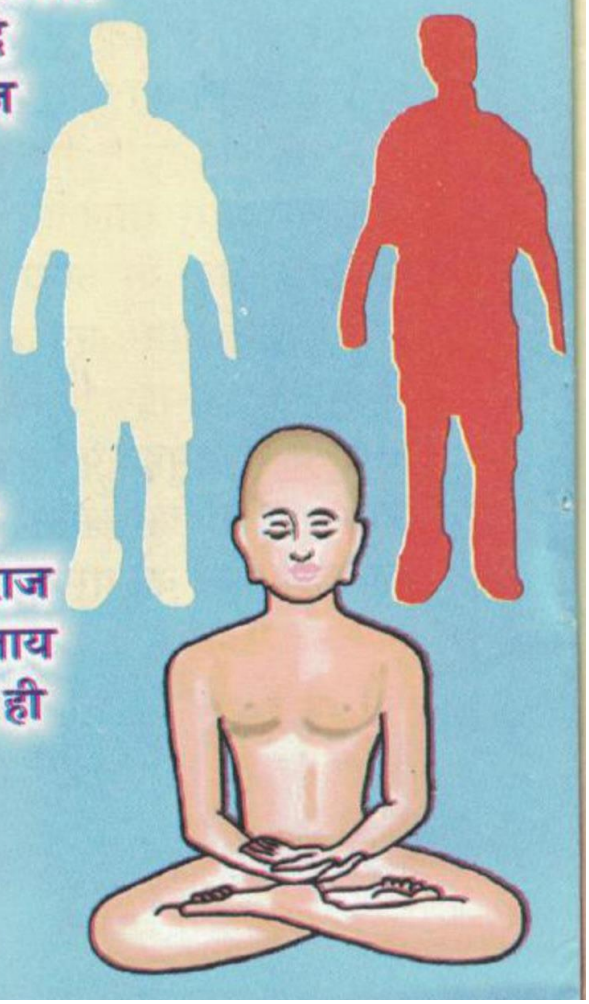

१३ आहारक और केवली समुद्घात

१. आहारक समुद्घात किसे कहते हैं ?

परम ऋद्धिधारी मुनिराजों की शंका के समाधान, तीर्थों की वंदना और हिंसा से बचने के लिए मस्तक में से आहारक शरीर के निकलने को आहारक समुद्घात कहते हैं ।

२. केवली समुद्घात किसे कहते हैं ?

जब सयोग केवली की आयुकर्म की स्थिति कम हो और शेष तीन अघातिया कर्मों की स्थिति अधिक हो तब अन्य कर्मों को आयुकर्म की स्थिति के बराबर करने हेतु आत्मप्रदेशों के बाहर निकलने को केवली समुद्घात कहते हैं।

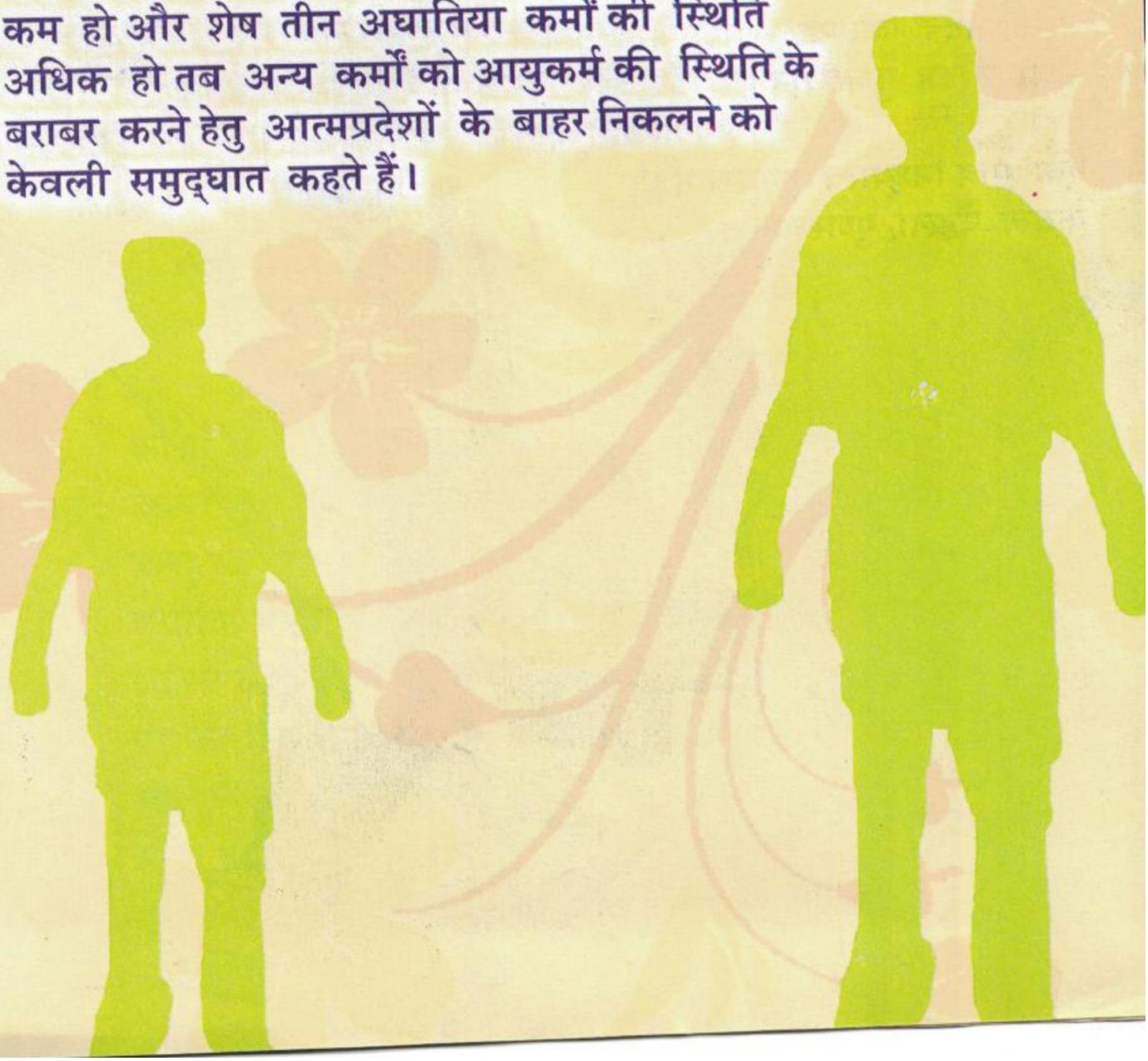

१४ जिनागम से

१. देवगति में कितने गुणस्थान होते हैं ?
१ से ४ तक ।

२. मनुष्यगति में कितने गुणस्थान होते हैं ?
सभी गुणस्थान १ से १४ तक।

३. तिर्यंचगति में कितने गुणस्थान होते हैं ?
१ से ५ तक।

४. नरकगति में कितने गुणस्थान होते हैं ?
१ से ४ तक।

५. भव्य जीवों के कितने गुणस्थान होते हैं ?
सभी चौदह गुणस्थान।

६. अभव्य जीवों के कितने गुणस्थान होते हैं ?
एक मात्र मिथ्यात्व गुणस्थान।
केवल पहला गुणस्थान ।

१५

कर्त्ता कौन ?

चेतन : काया की माया में ही भटका हूँ मैं,
काया के बंधन में ही, अटका हूँ मैं।
माया : काया नहीं तुम्हारा बंधन है,
वह तो तुम्हारे ज्ञान का साधन है।
चेतन : ज्ञान तो मेरा स्वरूप है,
काया बिन भी जान सकता है।
माया : काया बिन जानेगा कैसे ?
काया बिन कुछ करेगा कैसे ?
चेतन : जानना ही मेरा काम है,
करना मेरा काम नहीं।
पलटना वस्तु स्वभाव है,
मैं वस्तु पलट सकता नहीं।
माया : काया से वस्तु उठाते रखते हो,
काया से देखते सुनते हो।

चेतन : काया के साथ भी मैं कुछ कर सकता नहीं,
वस्तु स्वभाव में फेर- फार कर सकता नहीं।
क्योंकि पर में परिवर्तन कर सकता नहीं,
जानने के अतिरिक्त मैं कुछ कर सकता नहीं।
पर का मैं कर्त्ता हो सकता नहीं,
स्वज्ञान के कर्तृत्व से मुझे इंकार नहीं।
सभी द्रव्य अपने-अपने कर्त्ता हैं,
पुद्गल, पुद्गल का; जीव, जीव का कर्त्ता है।

१६ आत्मानुभूति कैसे करते हैं ?

गुरुजी : विकल्पों को अब छोड़ो तुम,
आत्मानुभूति करो अब तुम।
शिष्य : विकल्पों को कैसे छोड़ूँ मैं ?
आत्मानुभूति कैसे करूँ मैं ?
गुरुजी: सप्त तत्त्व को जानो तुम ,
स्वपर भेदविज्ञान करो तुम।
शिष्य : तत्त्व स्वरूप जान गया मैं,
निज स्वरूप समझ गया मैं।
पर चेतन में कैसे रमूँ मैं ?
अमूर्त्त का ध्यान कैसे करूँ मैं ?
गुरुजी : सर्वप्रथम पर का विचार छोड़ो तुम,
स्वात्मा का ही विचार करो तुम।
ज्ञाता हूँ मैं, शुद्ध हूँ मैं,
चिदानन्द स्वरूप हूँ मैं -
ऐसे स्व विचारों में तन्मय होते जब,
सहज ही रोमांच होने लगता तब।
शिष्य: फिर ....
गुरुजी: धीरे - धीरे स्वविचार भी छूट जाता है,
परिणाम स्व में एकाग्र हो जाता है।
केवल चिन्मात्र स्वरूप भासने लगता है।
स्व में आनंद हिलोरें लेने लगता है।
शिष्य: क्या इसी से भगवान बनते हैं ?
क्या इसी को आत्मानुभूति कहते हैं ?
गुरुजी: हाँ, आत्मानुभूति से ही भगवान बनते हैं ,
स्व की अनुभूति को ही आत्मानुभूति कहते हैं ।

लेखिका की कृतियाँ

शिशु वर्ग

(१) जैन नर्सरी(हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल)
(२) जैन के. जी. भाग - १ (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल)
(३) जैन के. जी. भाग - २ (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल)
(४) जैन के. जी. भाग - ३ (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल)
(५) जैन कलर बुक भाग - १ (ड्राइंग बुक)
(६) जैन कलर बुक भाग - २ (ड्राइंग बुक)

बाल वर्ग

(१) चलो पाठशाला : चलो सिनेमा भाग -१ (नाटक)
(२) चलो पाठशाला : चलो सिनेमा भाग -२ (नाटक)
(३) जैन जी. के. भाग - १ (हिन्दी, अंग्रेजी)
(४) जैन जी. के. भाग - २ (हिन्दी, अंग्रेजी)
(५) जैन जी. के. भाग - ३ (हिन्दी, अंग्रेजी)
(६) जैन जी. के. भाग - ४ (हिन्दी, अंग्रेजी)
(७) सीखें हम : गाते गाते

किशोर वर्ग

(१) जैन जी. के. भाग - ५
(२) जैन जी. के. भाग - ६
(३) जैन जी. के. भाग - ७
(४) जैन जी. के. भाग - ८
(५) जैन जी. के. भाग - ९
(६) जैन जी. के. भाग - १०
(७) आगम प्रवेश भाग - १
(८) आगम प्रवेश भाग - २
(९) आगम प्रवेश भाग - ३
(१०) शब्दों की रेल
(११) मुझमें भी एक दशानन रहता है
(१२) संस्कार का चमत्कार (कहानी)
(१३) राम कहानी
(१४) विचार के पत्र : विकार के नाम

युवा वर्ग (सभी वर्ग)

(१) तलाश : सुख की
(२) मुक्ति की युक्ति
(३) सत्ता का सुख
(४) प्रमाणज्ञान
(५) जैन दर्शनसार
(६) आचार्य अमृतचन्द्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय
(७) आचार्य कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार : एक समालोचनात्मक अध्ययन
(८) एक संभावना यह भी

गेम

(1) नो टाईमपास
(2) लगे रहो... जीवराज!
(3) हमारी लाईफ

Total 35

बाल साहित्य के उत्कृष्ट लेखन हेतु पं. टोडरमल पुरस्कार से सम्मानित विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया को सम्प्रति ८ मार्च २००८ को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से सम्मानित किया गया। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की आप सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ।

आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया।

आपके द्वारा एम. ए. में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई।

आपने 'आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार: एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी. एच. डी की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों को ध्यान में रखते हुए आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथों और टीकाकारों का सर्वांगीण शोधपरक विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है जो कि विद्वत्-जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट करता है।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदविज्ञान कराया गया है। अद्यावधि जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन, चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्त्वज्ञान का समावेश - इन पुस्तकों की विशिष्ट पहचान है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन - जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधायों के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेद-विज्ञान से ओतप्रोत हैं। सरलता आपकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है। कलरफुल चित्रों के माध्यम से रोचक प्रस्तुति और आकर्षक आधुनिक भाषा-शैली में सर्वप्रथम लिखी गई आपकी बाल पुस्तकें मील का पत्थर साबित हुई हैं।

सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, तथा शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में आपके द्वारा बालकों और युवाओं के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी कम समय में अधिक से अधिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी 35 पुस्तकें लिखी गई हैं, जिनकी सूची अंदर प्रकाशित की गई है।